मैथिली (अनिवार्य भाषा) 50अंक

Part - I

(Sc., Arts, Com.)

Page No.:
Date: 06/07/2020

Lecture No - 2
Unit - 2

डॉ. अरविन्द झा
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय
दरभंगा
मो॰ - 9040201409

विद्यापति वन्दना

— गोविन्द दास

विद्यापतिक प्रभाव हुनक समकालीन एवं परवर्ती कवि लोनि पर पूर्ण रूपेण पड़ल छला जाहिसँ गोविन्द दास सेहो अपन छथि। ओ हुनका सँ एतेक प्रभावित छलाह जे प्रस्तुत मे हुनक वन्दनाक रचना कए देलनि। आ सत्य के स्वीकार कएलनि।

"कविपति विद्यापति भनिमाने।
भाव गीत जग-चित चोराओल
गोविन्द गौरि-सरसरस गान॥"

प्रस्तुत मे गोविन्द दास विद्यापति के अपन सत्य गुरु मानैत छलाह। विद्यापतिए के आदेश मानि हुनक सहस्र अपन पद मे हुनि माधुर्य आ भक्ति भावक प्रवाह करैत छथि। हुनक सहस्र अपन कविता राधाकृष्णक

प्रेम लीलाक प्रकृतिक सं वर्णन करलनि। गोविन्द दास विद्यापति वन्दनक रूप कहैत छथि जे हिनक रचना सम्पूर्ण संसारक चित्त हरण करैत अछि। महाकवि विद्यापति जे रचना उपलब्ध अछि वा ओ लोक कंठ मे अछि से सभ जगत भरिक साहित्यक सार अछि। स्वयं भगवान शिव कुनक नगरी ओ मैथिलाणी सूनबा हेतु उगना बनि कुनबा लग चाकरी करैत छलाह।

"जे सुख सम्पद शंकर धनिया।
से सुख-सार सरस रसिकाई
कण्ठहि कण्ठ परामल बनिया॥"

गोविन्द दास कहैत छथि हम ओहन व्यक्तिक वन्दना करैत छी जनिक गीत सूनबा लेल स्वयं महादेव आमल छलाह आ अपना कें धन्य मानैत छलाह। जनिक सब पद लोकक कण्ठहार बनल अछि। भक्त शिरोमणि नारद हिनक भक्ति रचनाक श्रवणसं रसप्लावित भऽ भाव-विह्वल भऽ जाइत छलाह। समाजक सभ वर्गक हेतु ई गीतक रचना करैत छलाह।

"आनन्दे नारद न धरए थेहा।
से आनन्द रस-जग भरि बरिषल
सुरसमय विद्यापति-रस-मेहा॥"

कवि विद्यापतिक रस धार मे

Page No.:
Date: / /

मात्र गाइ उनि नहि बहुला, बल्कि संसारक सभ प्राणि हितक गीत गाबि वा सुनि काव्य रस मे डुबल रहैत छथि। सेहन हृदय अह्लाद कारी पदक रचना करि चला विद्यापति से छथि आन कओ नहि। गोविन्द दास के एहि बातक विस्मय छनि जे किछु मनि मन्द लोक विद्यापतिक पदक सुरब-समयता के छोड़ि आन सुरब दिस अपन मन के मोड़ित करि रहल छथि। गोविन्द दास हितक पद के श्रवण करि मन्त्र मुग्ध भ जाइत छथि। ओहि गीतक भाव मे पकड़य चाहैत छथि उदा जना उह लोक चन्द्रमा के छुबाक कोशिश करैत अछि आ असफल रहैत अछि तहिना हुनो असफल अपन के मानैत छथि जे विद्यापतिक गीतक आनन्द नहि लैत छथि हुनक हाल ओहि उह लोकक सहरा अछि। विद्यापतिक गीत वास्तव मे आनन्दक विषय थिक, जे नहि ग्रहण कएलनि कुछ आ आनन्द एहि रचनाक के चुन रहलाह।

— ० —

डॉ. अरविन्द झा